The Hindu Plus Summary : 11.01.2024

मेन्स मास्टर

मालदीव विवाद: 3 प्रमुख मुद्दे

यह लेख भारत और मालदीव के बीच बहुमुखी संबंधों की पड़ताल करता है, जिसमें रणनीतिक महत्व, आर्थिक परस्पर निर्भरता और लचीलेपन के पहलू शामिल हैं। यह द्विपक्षीय संबंधों में स्थिर भविष्य के लिए तनाव कम करने, परस्पर निर्भरता को पहचानने और संचार को मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर देता है।

भारत-मालदीव संबंधों को समझना: एक नज़दीकी नज़र

सामरिक महत्व:

• स्थान: मालदीव की भारत से निकटता और प्रमुख शिपिंग लेन पर इसकी स्थिति भारतीय समुद्री सुरक्षा के लिए रणनीतिक लाभ प्रदान करती है।

• रक्षा सहयोग: भारत मालदीव की सेनाओं को प्रशिक्षित करता है और उनकी समुद्री क्षमताओं को बढ़ाते हुए उपकरणों की आपूर्ति करता है।

• चीन के प्रभाव का मुकाबला: भारत मालदीव में चीन की बढ़ती आर्थिक और राजनीतिक उपस्थिति को संतुलित करना चाहता है।

आर्थिक परस्पर निर्भरता:

• आवश्यक आपूर्ति: भारत मालदीव को भोजन, दवा और निर्माण सामग्री जैसी रोजमर्रा की आवश्यकताएं प्रदान करता है।

• व्यापारिक साझेदारी: भारत मालदीव का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है, जो उसकी आर्थिक स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है।

• शिक्षा: भारतीय विश्वविद्यालय मालदीव के छात्रों को आकर्षित करते हैं, सांस्कृतिक और शैक्षणिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देते हैं।

लचीलापन और समर्थन:

• आपदा राहत: भारत ने प्राकृतिक आपदाओं और आपात स्थितियों के दौरान मालदीव को लगातार सहायता प्रदान की है।

• सुरक्षा सहयोग: भारत ने मालदीव की सुरक्षा के लिए सैन्य रूप से हस्तक्षेप किया है और अपनी नौसेना के साथ संयुक्त अभ्यास करता है।

• दीर्घकालिक साझेदारी: छह दशक पुराने राजनयिक और राजनीतिक संबंध सहयोग के लिए एक मजबूत आधार बनाते हैं।

आगे बढ़ते हुए:

• तनाव कम करना: दोनों देशों को चिंताओं को दूर करने और पारस्परिक लाभ के क्षेत्रों पर सहयोग करने की आवश्यकता है।

• परस्पर निर्भरता को पहचानना: स्थिर भविष्य के लिए बहुआयामी संबंधों को समझना महत्वपूर्ण है।

• संचार को मजबूत करना: खुली बातचीत और कूटनीति कूटनीतिक उथल-पुथल से निपटने की कुंजी है।

एक समुद्री सिद्धांत गुम है

लेख भारत और मालदीव के बीच हालिया तनाव को संबोधित करता है, भारत की समुद्री सुरक्षा के लिए मालदीव के रणनीतिक महत्व पर जोर देता है और बेहतर राजनयिक रणनीतियों और उन्नत समुद्री कूटनीति की वकालत करता है। इसके अतिरिक्त, यह एक व्यापक समुद्री सिद्धांत के रूप में SAGAR के विकास का सुझाव देता है।

भारत और मालदीव के बीच तनाव: सीखा गया सबक

रणनीतिक निहितार्थ:

• हिंद महासागर में रणनीतिक रूप से स्थित मालदीव, भारत की समुद्री सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

• भारतीय नौसेना को इसके महत्व के बारे में जागरूकता के बावजूद, एक व्यापक राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति की कमी के कारण छिटपुट समुद्री पहल हुई है।

राजनयिक जांच:

• मालदीव के साथ राजनयिक संबंध अति-राष्ट्रवाद, धार्मिक उत्साह और भारत-चीन प्रतिद्वंद्विता से प्रभावित हैं।

• तनाव के शुरुआती संकेत 2011 में उभरे, विशेष रूप से जीएमआर अनुबंध के रद्द होने के साथ; चेतावनियों और निवारक उपायों के बारे में सवाल उठाए गए।

कूटनीति में चुनौतियाँ:

• संभावित कृपालुता और भारत के सांस्कृतिक प्रभुत्व पर जोर देने के लिए कूटनीतिक दृष्टिकोण की आलोचना की गई।

• चीन का आर्थिक प्रलोभन और पाकिस्तान का धार्मिक प्रभाव मालदीव के अलगाव में योगदान करते हैं।

फोकस में बदलाव:

• भारत-प्रशांत क्षेत्र में सीमा विवादों से ध्यान हटाकर व्यापक भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

• भारत और चीन के बीच प्रभाव डालने की होड़, चीन को हिंद महासागर क्षेत्र में "दूरी के अत्याचार" का सामना करना पड़ रहा है।

मित्रवत पड़ोसियों का महत्व:

• 1988 के तख्तापलट के प्रयास, 2004 की सुनामी और 2014 के पेयजल संकट जैसे संकटों के दौरान एक मित्रवत पड़ोसी होने के लाभों का प्रदर्शन किया गया।

• कूटनीतिक चुनौतियों के बावजूद भारत का अच्छा पड़ोसी रवैया कायम रहने की उम्मीद।

चीन की मजबूरियाँ:

• चीन की अर्थव्यवस्था निर्बाध समुद्री व्यापार पर बहुत अधिक निर्भर है, जो हिंद महासागर के समुद्री मार्गों को महत्वपूर्ण बनाता है।

• बीजिंग अपने समुद्री हितों की रक्षा के लिए हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री पैठ विकसित करता है।

समाधान के रूप में समुद्री कूटनीति:

• पारंपरिक कूटनीति के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में समुद्री कूटनीति के बेहतर दोहन का आग्रह करता है।

• क्षेत्रीय कूटनीति का मार्गदर्शन करने के लिए SAGAR (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) को एक व्यापक समुद्री सिद्धांत के रूप में विकसित करने का आह्वान किया गया।

आय बनाम मूल्य समर्थन: एमएसपी के लिए मूल्य कमी भुगतान विकल्प

किसानों के सामने चुनौतियाँ:

• किसान खरीदार के बाज़ार में काम करते हैं, जिससे वे मूल्य निर्माता के बजाय मूल्य लेने वाले बन जाते हैं।

• थोक कटाई से मांग की तुलना में आपूर्ति अचानक बढ़ जाती है, जिससे कीमतों पर दबाव पड़ता है।

• किसान इनपुट के लिए खुदरा कीमतों का भुगतान करते हैं लेकिन फसल थोक में बेचते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वित्तीय असमानताएं पैदा होती हैं।

न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की मांग:

• किसान अपनी फसलों के लिए न्यूनतम गारंटी मूल्य सुनिश्चित करने के लिए एमएसपी की मांग करते हैं।

• जैसे-जैसे लोकसभा चुनाव नजदीक आएंगे, पार्टियों को अपने घोषणापत्रों में "एमएसपी के लिए कानूनी गारंटी" की मांग का सामना करना पड़ सकता है।

अर्थशास्त्रियों का दृष्टिकोण:

• कई अर्थशास्त्री लागत-अधिक मूल्य निर्धारण के आधार पर सरकार द्वारा निर्धारित एमएसपी का विरोध करते हैं, बाजार-संचालित रोपण निर्णयों का समर्थन करते हैं।

• विकृत उत्पादन निर्णयों से बचने के लिए किसानों को मूल्य समर्थन के बजाय आय समर्थन प्रदान करना पसंद करें।

आय सहायता के बारे में चिंताएँ:

• आय सहायता योजनाएं सभी किसानों को समान रूप से लाभ पहुंचाती हैं, जिससे अधिक संसाधनों, समय और प्रयास का निवेश करने वाले वास्तविक उत्पादकों को पुरस्कृत करने के बारे में चिंताएं बढ़ जाती हैं।

मूल्य आश्वासन की आवश्यकता:

• कुछ किसान, विशेषकर जिन्होंने कृषि में भारी निवेश किया है, अपनी फसलों के लिए मूल्य आश्वासन की मांग को उचित ठहरा सकते हैं।

एमएसपी की गारंटी:

• पारंपरिक तरीकों में खरीदारों को एमएसपी का भुगतान करने के लिए मजबूर करना या सरकारी एजेंसियों को संपूर्ण विपणन योग्य उपज को एमएसपी पर खरीदना शामिल है।

• तीसरा विकल्प मूल्य कमी भुगतान (पीडीपी) है, जो किसानों को भौतिक खरीद के बिना बाजार मूल्य और एमएसपी के बीच अंतर का भुगतान करता है।

पीडीपी कार्यान्वयन का उदाहरण:

• मध्य प्रदेश की भावांतर भुगतान योजना, जहां किसानों को बाजार मूल्य और एमएसपी के बीच अंतर के आधार पर भुगतान मिलता था।

• प्रारंभिक सफलता के बावजूद, केंद्रीय समर्थन की कमी के कारण योजना बंद हो गई।

हरियाणा की भावांतर भरपाई योजना (बीबीवाई):

• हरियाणा की पीडीपी योजना बाजरा, सरसों और सूरजमुखी के बीज जैसी फसलों को कवर करती है।

• एमएसपी और बाजार मूल्य के बीच अंतर के आधार पर भौतिक खरीद और पीडीपी को जोड़ती है।

• किसान 'मेरी फसल, मेरा ब्यौरा' पोर्टल पर पंजीकरण करते हैं, और पात्रता गिरदावरी और उपग्रह इमेजिंग के माध्यम से निर्धारित की जाती है।

व्यवहार्यता और आगे की राह:

• मध्य प्रदेश और हरियाणा चावल, गेहूं और गन्ने के अलावा अन्य फसलों में भी एमएसपी देने की व्यवहार्यता प्रदर्शित करते हैं।

• केंद्रीय वित्त पोषण के साथ एक राष्ट्रव्यापी पीडीपी योजना प्रभावी एमएसपी कार्यान्वयन के लिए बाजार के बुनियादी ढांचे और प्रणालियों के निर्माण के लिए अन्य राज्यों को प्रोत्साहित कर सकती है।

प्रीलिम्स बूस्टर

बाहरी अंतरिक्ष से एक अतिऊर्जावान कण कैसे भौतिकी में मदद कर सकता है

🌌 अमेतरासु कॉस्मिक रे डिस्कवरी: मई 2021 में जापानी वैज्ञानिक तोशीहिरो फ़ूजी द्वारा खोजी गई, अमातरसु ब्रह्मांडीय किरण अब तक पहचानी गई दूसरी सबसे अधिक ऊर्जा वाली ब्रह्मांडीय किरण है, जो 240 एक्सा-इलेक्ट्रॉन-वोल्ट (ईईवी) के असाधारण ऊर्जा स्तर को प्रदर्शित करती है।

- 🔬 टेलीस्कोप एरे प्रोजेक्ट की भूमिका: यू.एस. में टेलीस्कोप एरे प्रोजेक्ट ने ब्रह्मांड के रहस्यों को उजागर करने के लिए कॉस्मिक किरणों और उनके गुणों के अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, अमेतरासु कॉस्मिक किरण से संबंधित डेटा को कैप्चर करने और उसका विश्लेषण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 🤔 चुनौतियाँ और अनुत्तरित प्रश्न: अमेतरासु ब्रह्मांडीय किरण की असाधारण उच्च ऊर्जा मौजूदा मॉडलों और सिद्धांतों को चुनौती देती है, जिससे वैज्ञानिकों को संभावित अज्ञात स्रोतों या घटनाओं पर विचार करने और उच्च-ऊर्जा कण भौतिकी के पहलुओं का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित किया जाता है।
- 🌠 कॉस्मिक किरणें और ऊर्जा स्केल: कॉस्मिक किरणें ऊर्जा स्तरों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदर्शित करती हैं, और उनकी ऊर्जा को समझने से ब्रह्मांड के उप-परमाणु निर्माण खंडों की समझ में महत्वपूर्ण योगदान मिलता है।
- वैज्ञानिक निहितार्थ: अमेतरासु ब्रह्मांडीय किरण की खोज अधिक उच्च-ऊर्जा वाली ब्रह्मांडीय घटनाओं का पता लगाने के लिए चल रहे प्रयासों में सहायता करती है, कण भौतिकी में सिद्धांतों और मॉडलों को परिष्कृत करने के लिए महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करती है, और ब्रह्मांडीय किरणों के गुणों और उत्पत्ति के बारे में हमारी समझ को बढ़ाती है।
- 🌞 सौर बनाम गैलेक्टिक कॉस्मिक किरणें: सौर कॉस्मिक किरणों और गैलेक्टिक कॉस्मिक किरणों के बीच अंतर करने से चुंबकीय क्षेत्रों, अंतःक्रियाओं और ऊर्जा स्तरों से प्रभावित विभिन्न ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं में अंतर्दृष्टि मिलती है।
- 📚 वैज्ञानिक सिद्धांतों में योगदान: अमेतरासु ब्रह्मांडीय किरण की खोज मौजूदा मॉडलों और सिद्धांतों के लिए चुनौतियां खड़ी करती है, जिससे कण भौतिकी के कुछ पहलुओं के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता होती है, जो ब्रह्मांड की हमारी समझ के चल रहे विकास में योगदान देता है।

छूट नीति के आसपास के कानून

- ⚖️ सुप्रीम कोर्ट का फैसला (8 जनवरी): 2002 के गुजरात दंगों के दौरान बिलकिस बानो सामूहिक बलात्कार और हत्या मामले में 11 दोषियों के लिए गुजरात सरकार के सजा माफी आदेश को पलट दिया, सजा माफी के फैसलों में उचित कानूनी जांच और संवैधानिक सिद्धांतों के पालन पर जोर दिया गया।
- 📜 संविधान में क्षमादान शक्तियाँ: अनुच्छेद 72 और 161 राष्ट्रपति और राज्यपाल को क्षमादान शक्तियाँ प्रदान करते हैं, जिसका प्रयोग मंत्रिपरिषद की सलाह पर किया जाता है।
- 🏛️ सजा में छूट के लिए कानूनी ढांचा: सीआरपीसी की धारा 432 राज्य सरकारों को किसी दोषी की सजा का कुछ हिस्सा या पूरी सजा माफ करने की अनुमति देती है, धारा 433ए के तहत आजीवन कारावास की सजा 14 साल की होती है।
- 🕰️ बिलकिस बानो मामले की पृष्ठभूमि: 2002 के गुजरात दंगों के दौरान अपराध हुए, निष्पक्ष सुनवाई के लिए मामलों को महाराष्ट्र स्थानांतरित कर दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप 2008 में आजीवन कारावास हुआ।
- ⚠️ विवादास्पद छूट और कानूनी मुद्दे: गुजरात की छूट को अधिकार क्षेत्र की चिंताओं का सामना करना पड़ा, सुप्रीम कोर्ट के दिशानिर्देशों का उल्लंघन हुआ, और 1992 की नीति का खंडन किया गया जिसके तहत छूट दी गई थी, जिससे कानूनी और नैतिक जांच हुई।
- 📝 सुप्रीम कोर्ट का फैसला: मई 2022 के छूट आदेश को रद्द कर दिया गया, धोखाधड़ी के माध्यम से प्राप्त घोषित किया गया, छूट याचिका पर विचार करने के लिए उपयुक्त सरकार महाराष्ट्र थी, और दो सप्ताह के भीतर दोषियों के आत्मसमर्पण का आदेश दिया।
- 🌐 न्यायिक प्रणाली और कानून के शासन पर प्रभाव: कानून के शासन को मजबूत करने, समान मामलों में क्षेत्राधिकार, न्यायिक दिशानिर्देशों और संवैधानिक प्रावधानों पर विचार करने के लिए एक मिसाल कायम करने, मनमाने या राजनीति से प्रेरित छूट निर्णयों से बचने के रूप में देखा जाता है।

अमेरिकी चुनावों में कॉकस प्रणाली

- 🇺🇸 आयोवा रिपब्लिकन और 2024 चुनाव: आयोवा रिपब्लिकन 2024 के राष्ट्रपति चुनाव प्रक्रिया की शुरुआत को चिह्नित करते हुए, कॉकस आयोजित करने के लिए तैयार हैं।
- 🗳️ कॉकस प्रक्रिया: प्राइमरी के विपरीत, कॉकस की देखरेख राज्य पार्टी द्वारा की जाती है और मतदाताओं को छोटे समूह की सभाओं, उम्मीदवारों के प्रतिनिधियों के भाषणों, गुप्त मतदान मतदान और काउंटी सम्मेलन में प्रतिनिधियों के चयन के माध्यम से अपने पसंदीदा राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार का चयन करना शामिल होता है।
- 🌟 आयोवा का महत्व: आयोवा पारंपरिक रूप से पहला कॉकस आयोजित करता है, जिसका इतिहास 1968 से है, जो इसे नामांकन प्रक्रिया के लिए एक महत्वपूर्ण प्रारंभिक बिंदु बनाता है और पर्याप्त अभियान निवेश और प्रयासों को आकर्षित करता है।
- 📰 मीडिया और उम्मीदवार का ध्यान: उम्मीदवार और मीडिया लगातार आयोवा पर ध्यान देते हैं, इसे देश में प्रथम स्थान का दर्जा दिया गया है, जिससे महत्वपूर्ण अभियान निवेश और प्रयास हुए हैं।
- 🥇 पहला स्थान बनाए रखना: आयोवा ने राष्ट्रपति पद की नामांकन प्रक्रिया को आकार देने में अपनी भूमिका पर जोर देते हुए यह सुनिश्चित करने के लिए उपाय किए हैं कि वह राष्ट्र में अपना पहला दर्जा बरकरार रखे।

सर्वेक्षण के नतीजों के अनुसार शेरिंग टोबगे दूसरी बार भूटान के प्रधानमंत्री बनेंगे

- 🗳️ शेरिंग टोबगे का पुन: चुनाव: भूटानी मतदाताओं ने शेरिंग टोबगे को प्रधानमंत्री के रूप में दूसरे कार्यकाल के लिए चुना है, क्योंकि उनकी पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) ने 47 में से 30 सीटें जीतकर लगभग दो-तिहाई सीटें हासिल की हैं।
- 📊 चुनाव परिणाम और चुनौतियाँ: टोबगे ने गंभीर आर्थिक चुनौतियों के बीच पीडीपी को जीत दिलाई, चुनाव में आर्थिक चिंताओं का बोलबाला रहा और चीन और भारत के बीच रणनीतिक रूप से विवादित सीमा क्षेत्रों पर कड़ी नजर रखी गई।
- 🌍 रणनीतिक महत्व: भूटान का चुनाव चीन और भारत दोनों के लिए दिलचस्पी का विषय था, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने टोबगे को बधाई देते हुए भूटान के साथ भारत के घनिष्ठ संबंधों पर जोर दिया।
- टोबगे की पृष्ठभूमि: 58 वर्षीय पूर्व सिविल सेवक, टोबगे पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिग्री और हार्वर्ड से सार्वजनिक प्रशासन में मास्टर डिग्री के साथ एक उत्साही संरक्षण वकील हैं।
- 🤝 आभार और सहयोग: टोबगे ने प्रधान मंत्री मोदी का आभार व्यक्त किया और भूटान और भारत के बीच मित्रता और सहयोग के बंधन को मजबूत करने के लिए मिलकर काम करने की उत्सुकता व्यक्त की।

वित्त वर्ष 2028 तक भारत 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन जाएगा; सूर्योदय क्षेत्रों पर जोर'

- 🌅 सूर्योदय उद्योग की परिभाषा: एक सूर्योदय उद्योग अपने प्रारंभिक चरण में एक उभरते हुए व्यापार क्षेत्र को संदर्भित करता है, जो तेजी से विकास की क्षमता प्रदर्शित करता है, जो उच्च विकास दर, कई स्टार्टअप और पर्याप्त उद्यम पूंजी निधि की विशेषता है।
- 📈 सनराइज इंडस्ट्रीज की विशेषताएं: मुख्य विशेषताओं में उच्च विकास दर, स्टार्टअप की उपस्थिति और महत्वपूर्ण उद्यम पूंजी निवेश शामिल हैं, जो उन्हें दीर्घकालिक विकास संभावनाओं के कारण निवेशकों के लिए आकर्षक बनाते हैं।
- 🚀 सनराइज इंडस्ट्रीज के उदाहरण: उल्लेखनीय उदाहरणों में वैकल्पिक ऊर्जा, सोशल मीडिया और क्लाउड कंप्यूटिंग, ब्लॉकचेन, सूचना प्रौद्योगिकी और स्वच्छ ऊर्जा शामिल हैं, जिसमें उद्योग शैशवावस्था से परिपक्वता तक के चरणों के माध्यम से विकसित हो रहे हैं और संभावित रूप से सूर्यास्त चरण में प्रवेश कर रहे हैं।
- 📊 सनराइज इंडस्ट्रीज के लिए सफलता के कारक: व्यवहार्यता और दीर्घकालिक स्थिरता महत्वपूर्ण है, सफल सनराइज उद्योग प्रारंभिक सट्टा उत्साह से परे, समय के साथ स्थिरता और विकास का प्रदर्शन करते हैं।
- 🌇 सनसेट इंडस्ट्रीज के साथ तुलना: एक सनराइज उद्योग उभर रहा है और नवीन है, जबकि एक सनसेट उद्योग गिरावट में है, अक्सर तकनीकी परिवर्तन या स्वचालन के कारण, जैसे पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों से वैकल्पिक ऊर्जा में संक्रमण।